

# क्या हम नहीं जानते क्या बोल रहे हैं

**आम** धारणा यह है कि व्यक्ति को पता होता है कि उसने क्या कहा था। मगर शोधकर्ताओं ने बताया है कि कभी-कभी आपको यकीन दिलाया जा सकता है कि आपने वह कहा था, जो वास्तव में आपने कहा नहीं।

बोलने के बारे में प्रचलित मत यह है कि हम पहले योजना बनाते हैं, फिर बोलते हैं। यानी बोलने वाले को पहले से ही पता होता है कि वह क्या बोलने जा रहा है। मगर स्वीडन के लुंड विश्वविद्यालय के संज्ञान वैज्ञानिक एंड्रियास लिंड और उनके साथियों ने अपने प्रयोगों में देखा कि कई बार लोगों को अपनी कही हुई बात का पता तब चलता है जब वे खुद उसे सुनते हैं। यह तो ज़ाहिर है कि जब आप बोलते हैं, तो वह बात बाकी लोगों के अलावा खुद आपको भी सुनाई पड़ती है। इस विचित्र बात की जांच करने हेतु प्रयोग निम्नानुसार किया गया था।

इस प्रयोग में सहभागियों को स्ट्रूप टेस्ट करवाया गया। इस टेस्ट में व्यक्ति को 'लाल' जैसा शब्द दिखाया जाता है, जो किसी और रंग में लिखा होता है। इसे देखकर उस व्यक्ति को उस शब्द का रंग बताना होता है। लिंड के प्रयोग में सहभागी अपना उत्तर एक हेडफोन की मदद से सुन सकते थे। इन उत्तरों को रिकॉर्ड कर लिया गया था ताकि लिंड बीच-बीच में गलत शब्द बजा सकें। जब ऐसा किया जाता था, तो सहभागी को अपनी ही आवाज़ में गलत फीडबैक प्राप्त होता था।

जब सहभागी को गलत शब्द सुनाया जाता, उसके बाद स्क्रीन पर एक प्रश्न उभरता था। उनसे पूछा जाता था कि अभी उन्होंने क्या कहा था। इसके अलावा, पूरे टेस्ट के बाद भी उनसे पूछा जाता था कि क्या वे शब्द परिवर्तन को पहचान पाए थे। एक बात और थी। कंप्यूटर

पर जो सॉफ्टवेयर था वह शब्द को बोलने के बाद उसे अलग-अलग समय अंतराल पर बजा सकता था। जब गलत (यानी परिवर्तित) शब्द को सहभागी के बोलने के 5-20 मिलीसेकंड बाद बजाया गया तो सहभागी दो-तिहाई मामलों में यह पकड़ नहीं पाए कि शब्द को बदल दिया गया है। और परिवर्तन के 85 प्रतिशत मामलों में सहभागियों ने स्वीकार कर लिया कि उन्होंने ही गलत शब्द बोला होगा।



लिंड को इन परिणामों पर कोई आश्चर्य नहीं हुआ क्योंकि इससे पहले वे खुद भी इस टेस्ट से गुज़र चुके थे। उन्हें भी महसूस हुआ था कि शब्द परिवर्तन आपको अपने बोले गए शब्द पर संदेह करने को मजबूर कर सकता है। इसका मतलब है कि जब आप कुछ बोलते हैं, और

सुनते हैं कि आपने कुछ और ही बोला था तो भ्रम काफी गहरा होता है। यानी आप बोलने से पहले चाहे जितनी योजना बनाते हों, मगर जब बोलते हैं तो वापिस उसी बात को सुनना भी आपके निर्णय को प्रभावित करता है।

वैसे इस विषय में काम करने वाले अन्य लोग मानते हैं कि वास्तविक बोलचाल इस टेस्ट की तरह नहीं होता। कई लोग मानते हैं कि बोलने में पूर्व योजना की बड़ी भूमिका होती है हालांकि कान से मिलने वाला फीडबैक भी भूमिका अदा करता है। जैसे जिन वयस्कों की श्रवण शक्ति जाती रहती है, वे काफी मज़े से बोल पाते हैं, मतलब बगैर अपने उच्चारण के फीडबैक के काम चल जाता है। लिंड का कहना है कि यह सही है कि यदि श्रवण शक्ति नहीं है तो आप काम चला सकते हैं मगर यदि श्रवण शक्ति है तो आप उसका उपयोग फीडबैक के लिए करते ही हैं। (**स्रोत फीचर्स**)